International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-10-2020; Accepted: 05-11-2020; Published: 26-11-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 59-60

ऑनलाइन शिक्षा वर्तमान संकट की वैकल्पिक व्यवस्था

नीता कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
कोरोना संकट के दौरान वैकल्पिक तौर पर ऑनलाइन शिक्षा आवश्यक एक जरूरत है, लेकिन सामान्य दिनों में भारत के समग्र विकास के लिए ऑनलाइन शिक्षा को इस समय की सबसे बड़ी जरूरत के रूप में पेश किया जा रहा है और इसी में हर किसी को अपना भविष्य दिख रहा है।

मूल शब्द: कोरोना, ऑनलाइन शिक्षा, समग्र विकास

प्रस्तावना

''अर्थव्यवस्था और सामाजिक जीवन के अलावा कोरोना वायरस ने जिस चीज को सबसे ज्यादा प्रभावित किया है, वह है शिक्षा व्यवस्था और पठन–पाठन स्कूलों से लेकर उच्च सतरीय शिक्षा लगभग ठप्प हो गई है। हालांकि कुछ स्कूल कॉलेज या विश्वविद्यालयों में गूगल क्लासरूम, माइक्रोसाफ्ट टीम के साथ यू–ट्यूब, व्हॉटसएप्प आदि के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा का विकल्प अपनाया गया है, जो इस संकट काल में एकमात्र रास्ता है, लेकिन इस ऑनलाइन शिक्षा का कुछ जगहों में इस प्रकार से गुणगान किया जा रहा है। मानो हमारी शिक्षा व्यवस्था की हर समस्या का समाधान इसमें छिपा हुआ है।''[1]

कोरोना के इस विश्व संकट के समय ऑनलाइन शिक्षा का जश्न जोरों शोरों से मनाया जा रहा है। पढ़ने वाले, पढ़ाने वाले और शिक्षा संस्थानों में प्रशासनिक व्यवस्था के लोगों में जहाँ इस नए प्रयोग से एक अजीब सी बेचैनी है, वही शिक्षण संस्थानों के उच्चाधिकारी, मंत्रालय और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग लगातार ऑनलाइन एजुकेशन को लेकर उत्साहित है। इस उत्साह में एक के बाद एक आदेश निकाले जा रहे है और माना जा रहा है कि शिक्षा का ये माध्यम भारतीय लोकतंत्र में शिक्षा व्यवस्था की सभी खामियों को दूर कर देगा, जिसमें अध्यापकों की उपस्थिति से लेकर, विद्यार्थियों की उपस्थिति, एक निश्चित तारीख पर सारा पाठ्यक्रम पूरा करना इत्यादि सभी काम अब तकनीकी ढंग से पूरे हो सकेगे। इसके साथ ही ये भी माना जा रहा है कि ऑनलाइन एजुकेशन में प्रत्येक बात और गतिविधि को मॉनीटर किया जा सकता है, इसलिए ये अधिक पारदर्शी व्यवस्था भी साबित होगी, इसी प्रकार के न जाने कितने तर्क इसके पक्ष में दिये जा रहे है और कोरोना के इस संकट कालीन क्षण को एक आधार बनाकर शिक्षा व्यवस्था में पूरी तरह से परिवर्तन की तैयारी जोरों पर है।

''हालांकि ऑनलाइन शिक्षा को प्रोत्साहन देने की शुरूआत लॉकडाउन के दौरान एक वैकल्पिक व्यवस्था के नाम पर हुई, विद्यार्थियों को शिक्षा से जोड़े रखने हेतु इसे शिक्षक और विद्यार्थी के बीच एक संवाद बने रहने के तर्क के आधार पर ऑनलाइन बातचीत को बढ़ावा देने से इसकी शुरूआत हुई। दूसरा इतने लम्बे ब्रेक से विद्यार्थियों के शिक्षण सत्र का नुकसान नहीं हो, ये प्रयोजन भी इस वैकल्पिक व्यवस्था के आधार में था, परन्तु धीरे–धीरे ऐसा प्रतीत होता है कि अब सरकार ऑनलाइन शिक्षा को बड़े पैमाने पर लागू करने का मन बना रही है। आने वाले समय में वस्तुतः इसे फेस–टू–फेस इंटरेक्शन आधारित शिक्षा प्रणाली के विकल्प के रूप में स्थापित किया जाए तो कोई हैरानी नहीं होनी चाहिए।''[2]

वही ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली में शिक्षक और छात्र दुनिया के किसी भी कोने में बैठकर पठन–पाठन का कार्य करते हैं, इसमें शिक्षक और छात्र को कहीं आने जाने की जरूरत नहीं होती वे अपने घर से बैठकर तकनीकी के माध्यम से शिक्षण कार्य करते है। इसमें विद्यार्थियों को अपनी सुविधा के अनुसार डिजिटल दुनिया में उपलब्ध सूचना निरंतर रूप से पहुँचने का अवसर प्राप्त होता है, लेकिन अपनी हर जिज्ञासा की पूर्ति के लिए कोई व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से समस्या को सुलझाने का उनके पास विकल्प सीमित हो जाता है। जब बात व्यावहारिक शिक्षा की आती है तो यहाँ ऑनलाइन शिक्षा और सफल साबित होते हुए दिखता है, क्योंकि व्यावहारिक शिक्षा के लिए खुद से प्रयोग करना पड़ता है जो ऑनलाइन माध्यम से संभव नहीं है, जब हम दोनों माध्यम का तुलनात्मक अध्ययन करते है तो मालूम चलता है कि दोनों का एक ही उद्देश्य है, बच्चों के ज्ञान को बढ़ाते हुए उन्हें एक जिम्मेवार नागरिक के रूप में ढालना है। दोनों ही शिक्षा प्रणाली का समय और जगह के अनुसार अपनी–अपनी उपयोगिता है।

''वर्तमान वैश्विक अपदा (कोरोना) के दौर में ऑनलाइन शिक्षा की उपयोगिता पूरी दुनिया को महसूस हो रही है और यह हम सबकी जरूरत और मजबूरी बन गई है, जब तक की यह वैश्विक आपदा (कोरोना) का दौर समाप्त न हो जाए और एक बार फिर से हम पारस्परिक शिक्षा की और पूर्णरूप से लौटने के योग्य न बन जाए तो हमें शिक्षा के साथ चलना होगा।''[3] आने वाले वर्षों में जैसे–जैसे तकनीकी का विकास होगा और वर्तमान में आने वाली पीढ़िया उस तकनीकी युग में अपने आपको तकनीक के अनुरूप ढॉलने में कामयाब होगें। ऑनलाइन शिक्षा की प्रासंगिकता बढ़ती जायेगी, इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता। ऑनलाइन शिक्षा को सुगम बनाने के लिए वाई–फाई की सुविधा पहुँचानी पड़ेगी, शिक्षण सामग्री की ऑनलाइन उपलब्धता सुनिश्चित करना होगा, साथ ही शैक्षिक सामग्री की गुणवत्ता में गिरावट न हो इसके लिए गुणवत्ता नियंत्रण की प्रणाली विकसित करना होगा। शिक्षक और छात्रों को मानसिक रूप से तकनीक को फ्रेंडली बनाना होगा।

ऑनलाइन शिक्षा मात्र एक तकनीक नहीं बल्कि सामाजीकरण की नई प्रक्रिया है, जिसके जरिये सरकार और नीति निर्धारकों की नीति व नीयत को समझा जा सकता है और उसे उसी रूप में देखने की भी जरूरत है। कोरोना संकट में शारीरिक दूरी बनाए

रखकर शिक्षा के लिए तकनीकी का प्रयोग एक बात है, वैसे भी तकनीकी के विकास के साथ ही शिक्षा में भी उसका उपयोग होता रहा है, यह होना जरूरी भी है। ब्लैकबोर्ड से लेकर स्मार्टबोर्ड तक बदलती तकनीकी का उपयोग क्लासरुम टीचिंग को मजबूत और रूचिकर बनाने के लिए किया जाता था, लाइब्रेरी का डिजिटल होना उसी प्रक्रिया का एक रूप है।

प्रोफेसरों के व्याख्यान को रिकार्ड करना और उन्हें ऑनलाइन उपलब्ध कराना भी तकनीकी का उपयोग करना ही है, इन तकनीकों का उपयोग कर सामाजीकरण की प्रक्रिया को शिक्षा के द्वारा बढाया जाता रहा है।

देश के शिक्षा जगत के एक सम्पन्न और समृद्ध शिक्षा प्रबंधन, बुद्धिजीवी वर्ग और सरकार द्वारा ऑनलाइन कक्षाओं/परीक्षाओं को इस समय की सबसे बड़ी जरूरत के रूप में पेश किया जा रहा है, लेकिन इसके साथ ही विषय विशेषज्ञ इसके कई प्रकार के दोषों और कमियों पर भी ध्यान दिलाने लगे हैं। विद्यार्थी के पठन–पाठन और परीक्षा की इस वैकल्पिक व्यवस्था से सामाजिक, आर्थिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी गंभीर विपरीत प्रभाव डालने की संभावनाएं अक्सर अखबारों और टीवी चैनलों पर होती बहसों में स्पष्ट रूप से लम्बे समय से बताई जा रही है। मोबाइल की किरणों से आँखों पर दुष्प्रभाव और आइसोलेशन से बच्चों में चिड़चिड़पन बढ़ता नजर आ रहा है, जैसा कि स्वास्थ्य समाज और मनोविज्ञान क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञ भी आशंकाए जता रहे है। ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था के लिए ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों और शिक्षक दोनों के पास न्यूनतम जरूरी संसाधनों का नितांत अभाव दिखता है, शहरी क्षेत्रों के कुछ चुनिंदा विद्यालय ही इसके लिए सक्षम हो सके है। किन्तु इन स्कूलों में पढ़ने वाले बुत से ऐसे ग्रामीण परिवारों के बच्चे भी है जो मोबाइल और इंटरनेट की न्यूनतम सुविधा जुटाने में सक्षम नहीं है, ग्रामीण क्षेत्र की अभावग्रस्त शिक्षा व्यवस्था को ऑनलाइन कर ऑनलाइन शिक्षा की संकल्पना पर जोर देने से वैकल्पिक शिक्षा की सफलता का सपना पूरा होने वाला नहीं है। कोरोना से उपजी स्थिति और उसकी संभावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए यह लगना स्वाभाविक है कि भीड़ से बचने के लिए ऑनलाइन व्यवस्था कारगर सिद्ध हो सकती है, यदि देश की सरकारी सामाजिक और आर्थिक परिवेश उपयुक्त और सक्षम हो।

इसके साथ–साथ ऑनलाइन कक्षाओं के समर्थक उन पुरानी काट के अध्यापकों को भी कठघरे में खड़ा कर रहे है जो कुछ नया सीखने में हिचकिचाते है, इस माध्यम ने एक झटके में उनकी तमाम सेवाओं को किनारे कर दिया है। अब वो भी सीखने वालों में शामिल होने लगे है, लेकिन वर्तमान हालात कुछ ऐसे है कि इससे बचने का कोई रास्ता नहीं दिख रहा है और हर किसी को ऑनलाइन शिक्षा में ही भविष्य दिख रहा है। कोरोना का प्रसार बड़ी तेजी से हो रहा है और कोविड–19 अभी अपनी जड़े जमाये रहने वाली है, ऐसी आशंकाए व्यक्त की जा रही है। इसके चलते स्कूली शिक्षा से जुड़े सभी बोर्ड/विश्वविद्यालय अपनी परीक्षाएं स्थगित कर रहे है और विद्यार्थियों को उत्तीर्ण करने के अलग–अलग विकल्पों पर विचार मंथन चल रहा है। ऐसी स्थिति में निकट भविष्य में शिक्षण संस्थानों के खुलने की संभावनाए भी नहीं दिख रही है, अर्थात् वर्तमान में अपनी तमाम कमियों और दिक्कतों के बावजूद पढ़ने–पढ़ाने का ऑनलाइन तरीका ही आने वाले समय में एक मुख्य विकल्प बनने की संभावना बनती दिखाई दे रही है।

निष्कर्ष –

कोरोना संकट के इस दौर में शैक्षणिक संस्थानों के आगे जो चुनौती है, उसमें ऑनलाइन शिक्षा एक स्वाभाविक विकल्प दिखाई देता है। इस विकट परिस्थिति में राष्ट्रीय स्तर पर स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों ने गूगल क्लासरूम तथा विभिन्न प्रकार के यू–ट्यूब, व्हॉटएप्स आदि को ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम के लिए वैकल्पिक रूप से अपना लिया है।

संदर्भ सूची

1. निरंजन कुमार (जागरण) कोरोना के चलते वैकल्पिक तौर पर ऑनलाइन शिक्षा एक जरूरत है, लेकिन उपयोगी कक्षीय शिक्षा ही है।
2. सुधीर कुमार सुधार/शैलजा सिंह (न्यूज क्लिक) ऑनलाइन शिक्षा मूल संवैधानिक उद्देश्य से भटकाव का मॉडल है।
3. गोपेन्द्र कुमार सिन्हा गौतमः आलेख (डेली हन्ट)।